प्रश्न-8 "सच अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है"- इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर लेखिका और उसकी बहन में अकेले पथ पर चलने का दृढ़ साहस है। लेखिका ने अपने बलबूते पर बिहार के रूढ़िवादी लोगों के बीच रहकर नारी-जागृति का कार्य किया और कर्नाटक के एक छोटे-से कस्बे बागलकोट में जाकर नया प्राइमरी स्कूल खुलवाया।

लेखिका की बहन रेणु अपने मन की मालकिन थी। वह जो कुछ ठान लेती थी उसे वह करके रहती थी। एक दिन तेज़ वर्षा हुई। बहुत अधिक पानी भर जाने पर, भी बस न आने पर वह दो मील चल कर गई तथा स्कूल बंद होने के कारण वापस लौट आई। रेणु का इस तरह अकेले स्कूल जाना यह प्रमाणित करता है कि वह अकेले राह पर चलना जानती थी।

ये दोनों व्यक्तित्व मौलिक थे। ये विचारवान थे और अपनी राह पर स्वयं चलने की हिम्मत रखते थे।

अतिरिक्त प्रश्नोत्तर

प्रश्न लेखिका परदादी के किन गुणों से प्रभावित थी और क्यों?

उत्तर लेखिका की परदादी का गुण अनुकरणीय था। उनकी दो बातें हमें अपरिग्रह अर्थात अधिक संग्रह न करना और नारी सम्मान की प्रेरणा देती हैं।

(1) दादी ने स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर रखी थी कि वह अपने पास दो धोतियों से अधिक नहीं रखेंगी। यदि उन्हें तीसरी धोती मिलती तो वह किसी को दान कर देती थी। उनके इस व्यवहार में हमें सादगी, संयम और त्याग की

भावना झलकती है, जो प्रेरणादायी है।

(5) परदादी ने ईश्वर से मन्नत माँगी कि उनकी पतोहू को पहली संतान लड़की हो और उनकी यह मन्नत जग-जाहिर थी। उन्होंने अपनी इस मन्नत के विषय में कोई भी तर्क समाज के सामने नहीं रखा। लेकिन इतना तो अवश्य है कि उनकी इस मन्नत के पीछे लड़की जाति के सम्मान की भावना छिपी थी।

परदादी की भक्ति भी अनुकरणीय है। वह सच्चे मन से ईश्वर से जो भी माँगती थी, उन्हें मिल जाता था।

प्रश्न- भारतीय माँ का आम चरित्र कैसा होता है? लेखिका की माँ उनसे किस प्रकार अलग थीं? उनके कार्य भार को किसने उठाया?

उत्तर- माँ का तात्पर्य ममत्व से पूर्ण। ममता की मूर्ति। माँ के लिए उसकी संतान ही जीवन का केंद्र एवं धुरी होती है। भारतीय माँ अपने बच्चों से अपूर्व लाड़-दुलार करती है। भारतीय माँ अपने जीवन को अपने बच्चों के सुंदर भविष्य हेतु जीवनोपयोगी संस्कार देने में समर्पित कर देती है। लेकिन लेखिका की माँ इन सभी कार्यों से परे (दूर) थीं। इसलिए वह आम भारतीय माताओं से भिन्न थीं।

लेखिका की माँ के अपेक्षित कार्यों का दायित्व उनकी जेठानियों और पति ने संभाल लिया था।

प्रश्न- कर्नाटक के बिशप (पादरी) ने स्कूल खोलने से क्यों मना किया? क्या धर्म के नाम पर स्कूल खोलना प्रशंसनीय है?

उत्तर कर्नाटक के बिशप ने एक छोटे से कस्बे में स्कूल खोलने से इस लिए मना किया क्योंकि वहाँ ईसाई लोग बहुत कम थे। वे क्रिश्चयनों की पढ़ाई के लिए स्कूल खोलना चाहते थे। अन्य लोगों के लिए स्कूल खोलने में उनकी रुचि नहीं थी। पादरी महोदय लेखिका

के कहने पर स्कूल खोलने के लिए इस शर्त पर तैयार हुए कि वह स्कूल आने वाले सौ सालों तक चलता रहे। यह शर्त असंभव-सी थी। उनके इस शर्त से यह तो स्पष्ट हो गया था कि वह गैर क्रिश्चयनों के लिए स्कूल खोलना नहीं चाहते थे।

धर्म और जाति के आधार पर स्कूल का खोलना न खोलना किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता। इस तरह रखी गयी शर्तों को हम धार्मिक स्वार्थ कह सकते हैं।

प्रश्न :- पाठ के आधार पर लेखिका के सभी भाई-बहनों के विषय में संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर पाठ के आधार पर यह बात स्पष्ट होती है कि लेखिका के माता-पिता की छः संताने थीं। पाँच पुत्रियाँ और एक पुत्र। सबसे बड़ी पुत्री का नाम मंजुला जिनका घर का नाम रानी था। दूसरी पुत्री लेखिका स्वयं मृदुला जोशी जिनका दूसरा नाम उमा था। तीसरी पुत्री चित्रा जिनका एक और नाम गौरी था। चौथी पुत्री रेणु और पाँचवी पुत्री अचला थीं। राजीव पुत्र छठवें स्थान पर था। पाठ के आधार पर अब हम सभी का संक्षिप्त परिचय निम्न रूप में देंगे।

मंजुला भगत लेखिका की बड़ी बहन थीं। जिन्होंने विवाह के पश्चात अपने नाम में जैन के स्थान पर भगत रखा। मंजुला जी एक प्रसिद्ध लेखिका थीं। अपनी नानी परदादी और माँ की तरह वह स्वयं लीक से हटकर चलती थीं। लड़की होना वह अपना सौभाग्य समझती थीं दुर्भाग्य नहीं।

मृदुला गर्ग स्वयं लेखिका थीं। शादी के बाद इन्होंने भी अपने नाम से जैन हटाकर गर्ग लगाया था। लेखिका का मानना था कि नाम बदलने से व्यक्तित्व नहीं बदला करता। लेखिका स्वयं

दृढ निश्चयी स्वभाव की थी। अपने इसी स्वभाव के कारण ही उन्होंने बागलकोट जैसे छोटे कस्बे में बिशप से सहायता न मिलने पर लोगों की मदद से ही प्राइमरी स्कूल खोला। तथा बिहार में पर्दे में रहने वाली स्त्रियों को रूढ़िवादी विचारधारा से बाहर निकाल कर अभिनय की दुनिया से परिचित करवाया।

लेखिका के तीसरे नंबर की बहन चित्रा थी। यह दबंग स्वभाव की थी। एक बार जिस कार्य को करने की ठान लेती थी उसे करके ही मानती थी। अपने विवाह को लेकर उसने एलान किया कि वह उस लड़के से विवाह करेगी जिसके बारे में उसने निश्चय किया है। समय आने पर उसने लड़के के बारे में बताया और उसी से विवाह भी किया। चित्रा लेखन कार्य नहीं करती थी।

रेणु लेखिका की चौथे नंबर की बहन थी। यह भी लेखन कार्य से परे थी। यह अन्य बहनों से अधिक दबंग थी। यह अपने अनुसार अपना जीवन जीना पसंद करती थी। अपने मन की मालकिन थी। स्कूल से घर वापिस आते समय जहाँ अचला बस से घर वापिस आती थी वहीं रेणु गर्मी में पैदल आती थी। थोड़ी दूरी के लिए गाड़ी का प्रयोग करना उसे उचित नहीं लगता था। इसी तरह वह बी॰ए॰ करने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थी। अनेकों तर्क देने के बाद भी वह बी॰ए॰ की पढ़ाई के लिए तैयार नहीं हुई लेकिन जब पिता ने बी॰ए॰ करने का आदेश दिया तब उनकी आज्ञा का पालन किया।

सच बोलने में वह अपनी माँ से भी आगे थी।

लेखिका की पाँचवी बहन अचला थी। उसने लीक से पढ़ाई-लिखाई की। पिता की इच्छानुसार विवाह किया। जीवन के प्रथम चरण में वह लीक पर ही चलती रही किन्तु तीस साल की उम्र के पश्चात उसने भी लीक से विद्रोह किया और लेखिका बन गयी वह भी अंग्रेजी भाषा की। अचला ने अपने भाई-बहनों से हटकर अंग्रेजी भाषा में अपना लेखन कार्य किया। दृढ़ संकल्प इनका भी स्वाभाविक गुण था।

भाई राजीव सभी बहनों से छोटा था। वह भी हिन्दी में अपना लेखन कार्य करता था। बहनों की भाँति वह भी एक सफल लेखक था।

इस प्रकार पाठ के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखिका सहित सभी बहनों और भाई को वंशानुगत गुणों की प्राप्ति हुई थी जो उनकी परदादी, नानी और माता-पिता में विद्यमान थे।